

## प्रारंभिक परीक्षा

### होमो इरेक्टस से पहला आणविक साक्ष्य

#### संदर्भ

वैज्ञानिकों ने चीन से प्राप्त 400,000 वर्ष पुराने दांतों में संरक्षित प्रोटीन का उपयोग करके होमो इरेक्टस के जीवाश्मों से पहले आणविक साक्ष्य प्राप्त किए हैं।

#### खोज के बारे में

- **विधि:** जीवाश्मों को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाए बिना इनेमल प्रोटीन निकालने के लिए एसिड इचिंग (acid etching) का उपयोग किया गया।
  - एसिड इचिंग तकनीक में, दांत के इनेमल से प्रोटीन को मुक्त करने के लिए एक तनु अम्ल (dilute acid) का उपयोग किया गया था।
- **प्रोटीन ही क्यों?** मृत्यु के बाद डीएनए (DNA) तेजी से नष्ट हो जाता है, जबकि इनेमल प्रोटीन बहुत लंबे समय तक जीवित रह सकते हैं।
- **प्रमुख निष्कर्ष:** होमो इरेक्टस में एक अद्वितीय प्रोटीन संस्करण (variant) की पहचान की गई और एक अन्य की पहचान की गई जो डेनिसोवन्स (Denisovans) के साथ साझा की गई है।
  - डेनिसोवन्स एक विलुप्त मानव वंश हैं जिनका डीएनए कुछ एशियाई और ओशियानियाई आबादी में जीवित है।
- **निहितार्थ:** यह होमो इरेक्टस-संबंधित आबादी और डेनिसोवन्स के बीच संभावित आनुवंशिक संबंधों या अंतर-प्रजनन (interbreeding) का सुझाव देता है।
- **महत्व:** होमो इरेक्टस के जीवाश्मों से आणविक जानकारी की पहली सफल प्राप्ति।

#### होमो इरेक्टस के बारे में

- **कालक्रम:** लगभग 1.9 मिलियन से 110,000 वर्ष पूर्व निवास करते थे।
- **महत्व:** अफ्रीका के बाहर व्यापक रूप से फैलने वाली पहली मानव प्रजातियों में से एक।
- **लक्षण:** सीधी मुद्रा (upright posture), बड़ा मस्तिष्क और उन्नत पत्थर-उपकरणों का उपयोग।
- **प्रसिद्ध जीवाश्म:** तुर्काना बॉय (केन्या), होमो इरेक्टस का अब तक का सबसे पूर्ण ज्ञात नमूना।

### संयुक्त राष्ट्र मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर अवार्ड

#### संदर्भ

लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (UNIFIL) में सेवारत मेजर अभिलाषा बराक को संयुक्त राष्ट्र मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

### पुरस्कार के बारे में

- **उद्देश्य:** लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिला, शांति और सुरक्षा (WPS) एजेंडे को आगे बढ़ाने वाले शांति सैनिकों (peacekeepers) को मान्यता देना है।
  - WPS एजेंडा शांति और सुरक्षा प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी, सुरक्षा और नेतृत्व को बढ़ाने के लिए UNSC संकल्प 1325 (2000) के माध्यम से स्थापित किया गया था।
- **महत्व:** लैंगिक-उत्तरदायी शांति स्थापना और समावेशी संघर्ष समाधान को बढ़ावा देना है।
- **भारत की भूमिका:** संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत के मजबूत योगदान को दर्शाता है, जिसमें पहली पूर्ण-महिला संयुक्त राष्ट्र पुलिस इकाई की तैनाती और सबसे बड़े सैन्य योगदानकर्ताओं में से एक होना शामिल है।

### UNIFIL के बारे में

- **स्थापना:** 1978 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा।
- **अवस्थिति:** लेबनान-इजरायल सीमा के साथ दक्षिणी लेबनान।
- **अधिदेश (Mandate):** शत्रुता की समाप्ति की निगरानी करना, लेबनानी सशस्त्र बलों का समर्थन करना और क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखना।
- **मुख्यालय:** नक्रौरा (Naqoura), लेबनान।

### लिसिमा पठार (अंगोला)

#### संदर्भ

अंगोला में लिसिमा पठार पर हाल ही के जैव विविधता सर्वेक्षणों ने कई संभावित नई प्रजातियों की खोज की है, जो इस क्षेत्र के पारिस्थितिक महत्व को उजागर करती है।

#### लिसिमा पठार के बारे में

- **अवस्थिति:** अंगोला, दक्षिण-मध्य अफ्रीका में स्थित सुदूर उच्चभूमि पठार।
- **जल विज्ञान संबंधी महत्व:** कांगो, जांबेजी, ओकावांगो और क्वांगो नदियों जैसी प्रमुख नदी प्रणालियों के उद्गम (headwaters) का निर्माण करता है।
  - ओकावांगो नदी उन कुछ प्रमुख नदियों में से एक है जो समुद्र में नहीं गिरती है; यह ओकावांगो डेल्टा में समाप्त होती है।
  - क्वांगो नदी: कांगो नदी की एक प्रमुख सहायक नदी।
- **जैव विविधता हॉटस्पॉट:** अफ्रीका के सबसे कम खोजे गए जैव विविधता वाले क्षेत्रों में से एक माना जाता है, जिसमें विज्ञान के लिए संभावित रूप से कई नई प्रजातियां मौजूद हैं।
- **हालिया खोजें:** सर्वेक्षणों में मकड़ियों, ट्रेगनफलीज़, डैम्पेलफलीज़, तितलियों और अन्य कीड़ों की संभावित नई प्रजातियों को दर्ज किया गया।
- **संरक्षण स्थिति:** पठार के बड़े हिस्सों को संरक्षण मान्यता प्राप्त हुई है, जिसमें लिसिमा ल्या म्वोनो (Lisima Lya Mwono) को अंतर्राष्ट्रीय महत्व की रामसर आर्द्रभूमि (Ramsar Wetland) के रूप में नामित करना शामिल है।

- **खतरे:** इसके सुदूर होने ने पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित रखा है, लेकिन आवास का क्षरण, भविष्य में भूमि-उपयोग में बदलाव और अतीत के संघर्षों के अवशेष चिंता का विषय बने हुए हैं।

### पाइरोप्रोसेसिंग (PYROPROCESSING)

#### संदर्भ

पाइरोप्रोसेसिंग एक महत्वपूर्ण औद्योगिक तकनीक के रूप में उभरी है और दुनिया भर में कई क्षेत्रों में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

#### पाइरोप्रोसेसिंग क्या है?

- पाइरोप्रोसेसिंग से तात्पर्य बहुत उच्च तापमान द्वारा प्रेरित भौतिक या रासायनिक परिवर्तनों के माध्यम से ठोस पदार्थों के रूपांतरण से है।
- यह एक शुष्क तापीय उपचार प्रक्रिया (dry thermal treatment process) है जिसमें महत्वपूर्ण ऊर्जा इनपुट की आवश्यकता होती है। इस तकनीक का उपयोग मुख्य रूप से सीमेंट, धातुकर्म (metallurgical) और परमाणु ऊर्जा उद्योगों में किया जाता है।

#### पाइरोप्रोसेसिंग के प्रमुख अनुप्रयोग

- **सीमेंट उद्योग:** रोटरी भट्टों (rotary kilns) में चूना पत्थर को निस्तापित (calcine) करने और सीमेंट के निर्माण के लिए कच्चे माल को क्लिंकर (clinker) में पिघलाने/मिलाने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **धातुकर्म उद्योग:** तांबे, जस्ता और सीसा जैसी धातुओं को उनके अयस्कों से निकालने और परिष्कृत करने के लिए उच्च तापमान भूनने (roasting) और प्रगलन (smelting) में उपयोग किया जाता है।
- **परमाणु ऊर्जा क्षेत्र:** खर्च किए गए परमाणु ईंधन (spent nuclear fuel) को सुरक्षित रूप से अलग करने, उपचारित करने और पुनर्चक्रित करने के लिए उच्च तापमान वाले पिघले हुए नमक के बाथ (molten salt baths) में उपयोग किया जाता है।

### सरकारी प्रतिभूति बाजार को मजबूत करने और विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के उपाय

#### संदर्भ

केंद्र सरकार ने सरकारी प्रतिभूतियों (G-SEC) बाजार को मजबूत करने और भारत के इक्विटी और ऋण बाजारों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) प्रवाह को बढ़ाने के उद्देश्य से पूंजी बाजार सुधारों के एक व्यापक पैकेज का अनावरण किया है।

#### प्रमुख सुधारों की घोषणा

- **विदेशी व्यक्तियों द्वारा इक्विटी निवेश का उदारीकरण:** विदेशी मुद्रा प्रबंधन (गैर-ऋण साधन) नियम, 2019 में संशोधन मुख्य बदलाव इस प्रकार हैं:
  - भारत के बाहर रहने वाले व्यक्ति (NRI और OCI को छोड़कर) अब पोर्टफोलियो निवेश योजना (PIS) के माध्यम से सूचीबद्ध भारतीय इक्विटी में सीधे निवेश कर सकते हैं।
  - एक सूचीबद्ध कंपनी में किसी एकल विदेशी व्यक्ति के लिए निवेश सीमा 5% से बढ़ाकर 10% कर दी गई है।
  - एक कंपनी में ऐसे सभी विदेशी व्यक्तियों के लिए कुल सीमा 10% से बढ़ाकर 24% कर दी गई है।

- NRI और OCI द्वारा उपयोग किए जाने वाले मौजूदा डिजिटल ऑनबोर्डिंग ढांचे के माध्यम से निवेश को सुगम बनाया जाएगा।
- **सरकारी प्रतिभूति (G-Sec) बाजार में सुधार:** सॉवरेन ऋण में FPI निवेश को नियंत्रित करने वाले नियामक ढांचे की व्यापक समीक्षा। मुख्य बदलाव इस प्रकार हैं:
  - जी-सेक (G-Secs) में निवेश करने वाले FPIs के लिए अल्पकालिक निवेश सीमा, संकेंद्रण सीमा (concentration limits) और प्रतिभूति-वार कैप (security-wise caps) का उन्मूलन।
  - कुल निवेश सीमा बकाया केंद्र सरकार प्रतिभूतियों के 6% और राज्य सरकार प्रतिभूतियों के 2% पर अपरिवर्तित है।
  - अलग-अलग 'सामान्य' और 'दीर्घकालिक' निवेश श्रेणियों का विलय कर दिया गया है, जिससे निवेशकों को अधिक लचीलापन (flexibility) प्राप्त हुआ है।
- **सरकारी प्रतिभूतियों में FPI निवेश के लिए कर छूट:** सॉवरेन ऋण में विदेशी निवेश के लिए कर-मुक्त ढांचे की शुरुआत। मुख्य बदलाव इस प्रकार हैं:
  - FPIs को सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश से अर्जित ब्याज आय और पूंजीगत लाभ (capital gains) पर आयकर से पूर्ण छूट प्राप्त होगी।
  - यह छूट 1 अप्रैल 2026 को या उसके बाद अर्जित आय पर लागू होगी।
  - यह लाभ बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (BIS) तक भी विस्तारित किया गया है।

## मुख्य परीक्षा

### बदलती वैश्विक व्यवस्था में क्वाड

#### संदर्भ

हालिया क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक ने एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और लचीले (resilient) हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की। बैठक में नई पहलों का अनावरण किया गया जो क्वाड के एक परामर्शदात्री संवाद (consultative dialogue) से व्यावहारिक सहयोग और क्षेत्रीय लचीलेपन के मंच के रूप में विकसित होने को दर्शाती हैं।

#### समकालीन वैश्विक व्यवस्था में क्वाड की प्रासंगिकता

- **जबरदस्ती के खिलाफ रणनीतिक संतुलन (Strategic Counterbalance to Coercion):** क्वाड यथास्थिति को बनाए रखने और बल या जबरदस्ती के माध्यम से क्षेत्रीय संतुलन को बदलने के एकतरफा प्रयासों को रोकने का प्रयास करता है।
  - उदाहरण के लिए, दक्षिण चीन सागर के चीन के सैन्यीकरण, ताइवान पर बढ़ते दबाव आदि पर चिंताएं।
- **नियम-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देना:** यह समूह नेविगेशन की स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण विवाद समाधान का समर्थन करता है।
  - उदाहरण के लिए, UNCLOS पर निरंतर जोर, दक्षिण चीन सागर में नेविगेशन की स्वतंत्रता
- **आर्थिक सुरक्षा और आपूर्ति-शृंखला लचीलापन:** क्वाड का उद्देश्य विश्वसनीय आपूर्ति शृंखलाओं का निर्माण करना और संकेंद्रित विनिर्माण केंद्रों (concentrated manufacturing hubs) पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना है। (क्वाड क्रिटिकल मिनरल्स इनिशिएटिव लॉन्च किया गया क्योंकि चीन वर्तमान में वैश्विक दुर्लभ मृदा/रेयर अर्थ्स का लगभग 70% संसाधित करता है।)
- **महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग:** क्वाड प्रौद्योगिकी को आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले एक रणनीतिक क्षेत्र के रूप में तेजी से देखता है।
  - उदाहरण के लिए, सेमीकंडक्टर, एआई (AI), क्वांटम प्रौद्योगिकियों, ओपन रैन (Open RAN) नेटवर्क, साइबर सुरक्षा और विश्वसनीय डिजिटल बुनियादी ढांचे में सहयोग।
- **डिजिटल कनेक्टिविटी को मजबूत करना:** यह समूह महत्वपूर्ण संचार बुनियादी ढांचे और डेटा प्रवाह को सुरक्षित करना चाहता है।
  - उदाहरण के लिए, लचीले अंडरसी केबल (undersea cable) नेटवर्क पर सहयोग जो 95% से अधिक वैश्विक इंटरनेट ट्रैफिक ले जाते हैं।
- **क्षेत्रीय सार्वजनिक वस्तुओं का प्रदाता:** क्वाड हिंद-प्रशांत को प्रभावित करने वाली गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों के समाधान में योगदान देता है।
  - उदाहरण के लिए, वैक्सीन साझेदारी, आपदा-प्रतिक्रिया अभ्यास और जलवायु लचीलापन पहल।
- **बहुध्रुवीय हिंद-प्रशांत का समर्थन:** क्वाड मध्यम शक्तियों (middle powers) को एक औपचारिक गठबंधन संरचना बनाए बिना क्षेत्रीय शासन को आकार देने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

### क्वाड सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

- **समुद्री सुरक्षा:** पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री जागरूकता, निगरानी और अंतर-संचालनीयता (interoperability) को बढ़ाना।
  - **उदाहरण के लिए,** मालाबार नौसेना अभ्यास; इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस (IP-MDA); 2026 में लॉन्च किया गया इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम सर्विलांस कोलैबोरेशन (IPMSC)।
- **महत्वपूर्ण खनिज और आपूर्ति श्रृंखलाएं:** रणनीतिक उद्योगों और ऊर्जा संक्रमण प्रौद्योगिकियों के लिए लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण।
  - **उदाहरण के लिए,** 2026 क्वाड क्रिटिकल मिनरल्स इनिशिएटिव; ईवी, सेमीकंडक्टर और रक्षा प्रणालियों के लिए महत्वपूर्ण लिथियम, कोबाल्ट, निकल और दुर्लभ मृदा पर सहयोग।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** वैश्विक ऊर्जा बाजारों में व्यवधानों के खिलाफ लचीलापन मजबूत करना।
  - **उदाहरण के लिए,** होर्मुज जलडमरूमध्य में व्यवधान की चिंताओं के बीच इंडो-पैसिफिक ऊर्जा सुरक्षा पर क्वाड पहल शुरू की गई।
- **महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियां:** नवाचार और विश्वसनीय प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना।
  - **उदाहरण के लिए,** क्वाड फेलोशिप, सेमीकंडक्टर सहयोग, एआई साझेदारी और डिजिटल मानक सहयोग।
- **कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचा:** पारदर्शी और टिकाऊ बुनियादी ढांचे के विकल्प प्रदान करना।
  - **उदाहरण के लिए,** फिजी पोर्ट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट; पोर्ट्स ऑफ द फ्यूचर पार्टनरशिप; क्षेत्रीय डिजिटल कनेक्टिविटी पहल।
- **मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR):** प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय संकटों के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया को मजबूत करना।
  - **उदाहरण के लिए,** 2004 की हिंद महासागर सुनामी के दौरान सहयोग से उत्पन्न; म्यांमार और पापुआ न्यू गिनी में आपदाओं के दौरान हालिया समन्वय।
- **साइबर सुरक्षा और डिजिटल बुनियादी ढांचा:** महत्वपूर्ण डिजिटल नेटवर्क और संचार प्रणालियों की रक्षा करना।
  - **उदाहरण के लिए,** अंडरसी केबल सुरक्षा, साइबर लचीलापन और सुरक्षित दूरसंचार नेटवर्क पर सहयोग।

### भारत के लिए क्वाड का महत्व

- **चीन के रणनीतिक दबाव का मुकाबला करना:** क्वाड हिंद-प्रशांत में बढ़ते चीनी प्रभाव का जवाब देने की भारत की क्षमता को मजबूत करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** चीन के नौसैनिक विस्तार और हिंद महासागर में "स्ट्रिंग ऑफ पर्स" (String of Pearls) बुनियादी ढांचा नेटवर्क को रणनीतिक संतुलन प्रदान करता है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखना:** क्वाड की अनौपचारिक प्रकृति भारत को औपचारिक गठबंधन में प्रवेश किए बिना सहयोग को गहरा करने की अनुमति देती है।
  - **उदाहरण के लिए,** नाटो (NATO) के विपरीत, क्वाड कोई पारस्परिक-रक्षा दायित्व नहीं लगाता है, जो भारत की पारंपरिक रणनीतिक स्वायत्तता के अनुरूप है।

- **भारत की समुद्री भूमिका को मजबूत करना:** क्वाड हिंद महासागर क्षेत्र में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता (net security provider) के रूप में भारत की स्थिति को बढ़ाता है।
  - उदाहरण के लिए, IP-MDA और IPMSC अवैध रूप से मछली पकड़ने, समुद्री मिलिशिया और ग्रे-ज़ोन (grey-zone) गतिविधियों की निगरानी करने की भारत की क्षमता में सुधार करते हैं।
- **आर्थिक अवसरों का विस्तार:** क्वाड वैश्विक विनिर्माण और निवेश प्रवाह के विविधीकरण का समर्थन करता है।
  - उदाहरण के लिए, चाइना+1 रणनीति, और महत्वपूर्ण खनिज साझेदारी भारत के विनिर्माण क्षेत्र के लिए अवसर पैदा करती है।
- **प्रौद्योगिकी पहुंच को सुविधाजनक बनाना:** सहयोग उन्नत प्रौद्योगिकी पारिस्थितिक तंत्र में भारत की भागीदारी को गति देता है। (सेमीकंडक्टर, एआई, स्वच्छ ऊर्जा और अगली पीढ़ी के दूरसंचार में साझेदारी।)
- **क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाना:** क्वाड हिंद-प्रशांत शासन और क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला को आकार देने में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करता है।
- भारत क्वाड, आसियान (ASEAN) और ग्लोबल साउथ के बीच एक सेतु के रूप में तेजी से कार्य कर रहा है।

### क्वाड के सामने चुनौतियाँ

- **संस्थागतकरण का अभाव:** क्वाड में स्थायी सचिवालय, चार्टर या संधि-आधारित ढांचे का अभाव है।
  - उदाहरण के लिए, नेतृत्व परिवर्तन और घरेलू राजनीतिक परिवर्तन निरंतरता को प्रभावित कर सकते हैं, जैसा कि हाल के नेता-स्तरीय शिखर सम्मेलनों में देरी में देखा गया है।
- **प्रतिस्पर्धी मिनीलेटरल (Minilateral) ढांचे:** अन्य सुरक्षा व्यवस्थाओं का उद्भव क्वाड की रणनीतिक केंद्रीयता को कम कर सकता है।
  - उदाहरण के लिए, AUKUS, "स्क्वाड" (यूएस-जापान-ऑस्ट्रेलिया-फिलीपींस) और अन्य मुद्रा-आधारित गठबंधन तेजी से ध्यान आकर्षित करते हैं।
- **विविध खतरे की धारणाएं:** सदस्य विभिन्न भौगोलिक थिएटरों और सुरक्षा चिंताओं को प्राथमिकता देते हैं।
  - उदाहरण के लिए, भारत हिंद महासागर और एलएसी पर ध्यान केंद्रित करता है; पूर्वी चीन सागर और ताइवान पर जापान; प्रशांत द्वीप समूह पर ऑस्ट्रेलिया; व्यापक इंडो-पैसिफिक में अमेरिका।
- **आर्थिक एकीकरण घाटा:** क्वाड में क्षेत्रीय व्यापार ब्लॉकों की तुलना में व्यापक आर्थिक संरचना का अभाव है।
  - उदाहरण के लिए, आरसीईपी के विपरीत, इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (आईपीईएफ) बाजार-पहुंच प्रतिबद्धताएं प्रदान नहीं करता है।
- **चीन संबंधों का प्रबंधन:** सभी क्वाड सदस्य रणनीतिक चिंताओं के बावजूद चीन के साथ महत्वपूर्ण आर्थिक संबंध बनाए रखते हैं।
  - उदाहरण के लिए, आर्थिक अन्योन्याश्रयता के साथ प्रतिस्पर्धा को संतुलित करना एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

### क्वाड के भीतर भारत के लिए चुनौतियाँ

- **महाद्वीपीय बनाम समुद्री सुरक्षा दुविधा:** हिमालयी सीमा के साथ भारत की प्राथमिक सुरक्षा चुनौती बनी हुई है।

- उदाहरण के लिए, क्वाड समुद्री सहयोग को मजबूत करता है लेकिन एलएसी से संबंधित आकस्मिकताओं के खिलाफ सीमित प्रत्यक्ष प्रतिरोध प्रदान करता है।
- **रूस के साथ संबंधों को संतुलित करना:** लंबे समय से चले आ रहे रणनीतिक साझेदार को अलग-थलग करने से बचने के लिए भारत की भागीदारी को कैलिब्रेट किया जाना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए, रूस भारत के लिए एक प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता और ऊर्जा भागीदार बना हुआ है।
- **चीन पर आर्थिक निर्भरता:** भारत का व्यापार और विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र चीनी आपूर्ति श्रृंखलाओं से जुड़ा हुआ है।
  - उदाहरण के लिए, चीन + 1 पहल के बावजूद तेजी से विविधीकरण मुश्किल बना हुआ है।
- **आसियान संवेदनशीलता का प्रबंधन:** कई आसियान देश प्रमुख-शक्ति प्रतिस्पर्धा के बारे में सतर्क रहते हैं।
  - उदाहरण के लिए, भारत को आसियान को आश्वस्त करना चाहिए कि क्वाड आसियान केंद्रीयता को कमजोर करने के बजाय पूरक है।

### आगे की राह

- **क्वाड को संस्थागत बनाना:** एक स्थायी सचिवालय और संरचित कार्यान्वयन तंत्र स्थापित करना। (राजनीतिक चक्रों पर निर्भरता कम होगी और पहल की निरंतरता में सुधार होगा।)
- **आर्थिक पहलों का संचालन:** घोषणाओं से परियोजना निष्पादन की ओर बढ़ना।
  - उदाहरण के लिए, भविष्य की साझेदारी के बंदरगाहों के कार्यान्वयन में तेजी लाना, महत्वपूर्ण खनिज परियोजनाएं और कनेक्टिविटी पहल।
- **समुद्री सहयोग को गहरा करना:** सूचना साझा करने, निगरानी नेटवर्क और परिचालन अंतरसंचालनीयता का विस्तार करना।
  - उदाहरण के लिए, मालाबार अभ्यास को मजबूत करना और आईएफसी-आईओआर और आईपीएमएससी के माध्यम से समुद्री-डोमेन जागरूकता को एकीकृत करना।
- **समुद्री और महाद्वीपीय सुरक्षा को जोड़ना:** हिंद-प्रशांत सुरक्षा चुनौतियों की परस्पर जुड़ी प्रकृति को पहचानना।
  - उदाहरण के लिए, महाद्वीपीय सुरक्षा चिंताओं पर अधिक राजनयिक, तकनीकी और खुफिया सहायता प्रदान करें।
- **क्वाड प्लस फ्रेमवर्क विकसित करना:** मुद्दा-विशिष्ट सहयोग पर समान विचारधारा वाले भागीदारों को शामिल करें।
  - उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, फ्रांस, इंडोनेशिया और प्रशांत द्वीप राष्ट्र चयनित पहलों में भाग ले सकते हैं।
- **आसियान-केंद्रित क्षेत्रवाद का समर्थन करना:** आसियान के नेतृत्व वाले संस्थानों के साथ सहयोग को मजबूत करना।
  - उदाहरण के लिए, जलवायु लचीलापन, आपदा प्रबंधन और कनेक्टिविटी परियोजनाओं का वित्तपोषण क्षेत्रीय विश्वास को मजबूत कर सकता है।

## अध्यादेश और न्यायिक नियुक्तियां (ORDINANCE AND JUDICIAL APPOINTMENTS)

### संदर्भ

अनुच्छेद 123 के तहत राष्ट्रपति द्वारा एक अध्यादेश जारी किए जाने के बाद एक संवैधानिक बहस छिड़ गई है, जिसके माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या 34 से बढ़ाकर 38 कर दी गई है।

### अध्यादेश क्या है?

- अध्यादेश कार्यपालिका द्वारा जारी किया गया एक अस्थायी कानून है, जब तत्काल विधायी कार्रवाई की आवश्यकता होती है और संसद कानून बनाने की स्थिति में नहीं होती है।
- यद्यपि यह राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित (promulgated) किया जाता है, लेकिन एक सीमित अवधि के लिए इसका कानूनी प्रभाव संसद के अधिनियम के समान ही होता है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने लगातार यह माना है कि अध्यादेश बनाने की शक्ति एक असाधारण और आपातकालीन शक्ति है जिसका उद्देश्य तत्काल स्थितियों को संबोधित करना है।

### भारत में अध्यादेश शक्ति का विकास

- 1857 के विद्रोह के बाद वायसराय के अधिकार को मजबूत करने के लिए भारतीय परिषद अधिनियम (Indian Councils Act), 1861 के माध्यम से अध्यादेश बनाने की अवधारणा पेश की गई थी।
- इसके बाद, भारत सरकार अधिनियम, 1935 ने गवर्नर-जनरल को अध्यादेश प्रख्यापित करने का अधिकार दिया।
- इस ढांचे को अनुच्छेद 123 के माध्यम से संविधान में शामिल किया गया था, जो राष्ट्रपति को अध्यादेश बनाने का अधिकार देता है।

### अध्यादेश की मुख्य विशेषताएं

- एक अध्यादेश का कानूनी दर्जा और प्रभाव वही होता है जो संसद द्वारा बनाए गए कानून का होता है।
- यह पूर्वव्यापी (retrospectively) रूप से कार्य कर सकता है, जो इसके प्रख्यापन से पहले की तारीख से प्रभावी होता है।
- यह संसद द्वारा बनाए गए मौजूदा कानूनों में संशोधन, निरसन (repeal), या परिवर्तन कर सकता है।
- कराधान कानूनों को भी अध्यादेश के माध्यम से पेश या बदला जा सकता है।
- संविधान में संशोधन के लिए अध्यादेश का उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- संसदीय कानून की तरह, यह भी संवैधानिक सीमाओं के अधीन रहता है, विशेष रूप से भाग III के तहत मौलिक अधिकारों से संबंधित प्रावधानों के।

### संवैधानिक प्रावधान

- **अनुच्छेद 124(1):** संसद को कानून के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या निर्धारित करने का अधिकार देता है।
- **अनुच्छेद 123:** संसद सत्र में न होने पर राष्ट्रपति को अध्यादेश प्रख्यापित करने का अधिकार देता है। ऐसे अध्यादेशों में कानून का बल होता है, लेकिन संसद के फिर से बुलाए जाने के छह सप्ताह बाद वे प्रभावी नहीं रहते, जब तक कि उन्हें किसी अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित न किया जाए।

### हाल के घटनाक्रम

- अध्यादेश के प्रख्यापन के बाद, सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों को शपथ दिलाई गई।
- दो नियुक्तियों ने उन रिक्तियों को भर दिया जो पहले से ही 34 न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या के भीतर मौजूद थीं।
- शेष तीन नियुक्तियाँ अध्यादेश के माध्यम से अस्थायी रूप से बनाए गए अतिरिक्त पदों पर की गईं।

### संबद्ध संवैधानिक और संस्थागत चिंताएं

- **अध्यादेश-निर्माण पर न्यायिक सावधानी से विचलन:** सर्वोच्च न्यायालय की संरचना को बदलने के लिए एक अध्यादेश का उपयोग न्यायालय के अपने ही न्यायशास्त्र (jurisprudence) के पालन पर सवाल उठाता है, जो विधायी कार्रवाई के विकल्प के रूप में कार्यकारी कानून-निर्माण को हतोत्साहित करता है।
  - उदा: डी.सी. वाधवा बनाम बिहार राज्य मामले में, न्यायालय ने संवैधानिक अनुचितता (constitutional impropriety) के रूप में अध्यादेशों पर बार-बार निर्भरता की आलोचना की थी।
- **शक्तियों के पृथक्करण पर अनुमानित प्रभाव:** अस्थायी कार्यकारी उपाय द्वारा बनाए गए पदों पर आसीन न्यायाधीशों को संस्थागत स्वतंत्रता के संबंध में चिंताओं का सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूप से तब जब केंद्र सरकार से जुड़े मामले न्यायालय के समक्ष आते हैं।
- **यदि अध्यादेश व्यपगत हो जाता है तो अनिश्चितता:** यदि संसद एक प्रतिस्थापन कानून बनाने में विफल रहती है, तो अध्यादेश-निर्मित पदों पर नियुक्त न्यायाधीशों की स्थिति अज्ञात संवैधानिक क्षेत्र में प्रवेश कर जाएगी।
  - उदा: गोकाराजू रंगाराजू बनाम आंध्र प्रदेश राज्य में मान्यता प्राप्त 'डी फैक्टो' (de facto) सिद्धांत पिछले न्यायिक निर्णयों की रक्षा कर सकता है।
- **न्यायिक स्वतंत्रता के लिए निहितार्थ:** कार्यपालिका को अस्थायी रूप से न्यायालय की स्वीकृत क्षमता निर्धारित करने की अनुमति देना, संस्थागत स्वायत्तता को संरक्षित करने के न्यायपालिका के लंबे समय से चल रहे प्रयासों के साथ असंगत माना जा सकता है।
  - उदा: सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट्स-ऑन-रिकॉर्ड एसोसिएशन बनाम भारत संघ मामले में, न्यायालय ने नियुक्तियों में न्यायिक प्रधानता (primacy) को सुरक्षित करने के लिए राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) के ढांचे को अमान्य कर दिया था।

### आगे की राह

- **प्रारंभिक विधायी अनुमोदन:** संसद को नए सृजित पदों के आसपास की अनिश्चितता को दूर करने के लिए अध्यादेश की जगह तुरंत कानून बनाना चाहिए।
- **भविष्य के विस्तार के लिए संसदीय मार्ग:** सर्वोच्च न्यायालय की ताकत में परिवर्तन आमतौर पर अस्थायी कार्यकारी उपायों के बजाय नियमित कानून के माध्यम से किया जाना चाहिए।
- **कॉलेजियम द्वारा संस्थागत दिशानिर्देश:** कॉलेजियम अध्यादेश द्वारा बनाए गए पदों के खिलाफ नियुक्तियों की सिफारिश करने से परहेज करने पर विचार कर सकता है जब तक कि ऐसे पदों को वैधानिक समर्थन प्राप्त न हो जाए।

- **संस्थागत विश्वसनीयता की रक्षा करना:** हितों के टकराव की धारणाओं से बचने के लिए, अस्थायी पदों पर बैठे न्यायाधीश केंद्रीय कार्यपालिका से जुड़े संवेदनशील संवैधानिक मामलों में भाग लेने में सावधानी बरत सकते हैं जब तक कि उनके पदों की कानूनी स्थिति का निपटारा नहीं हो जाता।

